वहाँ गुण की परीक्षा होती है, ढेर काम की नहीं, 'क्वालिटी' देखी जाती है, 'क्वान्टिटी' नहीं। आखिर संख्या में धरा क्या है ?

### हृदय-शुद्धि का महत्त्व

एक मशहूर कहानी है कि सत्यभामा भगवान श्रीकृष्ण को तौलना चाहती थी। एक पलड़े में भगवान बैठे और दूसरे पलड़े में वह अपने सोने के गहने डालती गयी। फिर भी भगवान का पलड़ा भारी ही रहा। आखिर वह थक गयी। उधर से रुक्मिणी आयी और उसने देखा कि सत्यभामा परेशान है तो फिर उसने सोने के गहनों पर तुलसी का एक पत्ता डाला और झट भगवान का पलड़ा हल्का हो गया, पत्तेवाला पलड़ा भारी हो गया। तुलसी के उस पत्ते में कोई वजन तो नहीं था, लेकिन उसमें रुक्मिणी की प्रीति, भक्ति, हृदय की शुद्धि थी। इसलिए तुलसी के उस छोटे से पत्ते का भगवान के पास बहुत ज्यादा वजन था। उसी तरह हृदय-शुद्धि पूर्वक की हुई सेवा की बड़ी कीमत है। ◆◆◆

कल मैंने काकासाहब की बापू पर लिखी हुई एक किताब पढ़ी। उसमें रोमांरोला का एक वाक्य पढ़ा, जिसने मेरा दिल खींच लिया—The less I have the mere I am मेरे पास जितना कम होता है, उतना ही मैं हूँ। यह जो have चलता है, उससे am कम पड़ जाता है। इस वाक्य से चिंतन के लिए एक दालान ही खुल जाता है। ◆

प्रार्थना-प्रवचन

सिंगपुरा (कश्मीर) ३१-७-'५९

# प्यार है बिजली, एतबार है बटन, उसे दबाइये तो सही

परसों हम सोपौर में थे, जो एक बहुत बड़ा सियासी मरकज है। वहाँ बहुत लोग आये। उन्होंने हमपर बड़ा प्यार, खूब मुहब्बत बरसायी। आज का यह छोटा-सा गाँव है, लेकिन यहाँ भी हमने वही मुहब्बत देखी। हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ सूबों में हमारी यात्रा हुई। हमने हर जगह ऐसा ही प्यार पाया।

### प्यार के बावजूद गुर्बत क्यों ?

हमारे मन में यह विचार आता है कि अल्लामियाँ ने जहाँ इतना प्यार बख्शा है, वहाँ इतने झगड़े और इतनी गुर्बत क्यों है ? प्यार है, फिर भी काम क्यों नहीं बन रहा है ? जब इसपर मैं सोचता हूँ, तब मुझे बिजली याद आती है। आपमें से बहुत लोगों ने बिजली नहीं देखी होगी। श्रीनगर में बिजली है। वहाँ घर-घर में बिजली है। बटन दबाया कि बिजली झट घर को रौशन कर देती है। बिजली घर में आयी, फिर भी घर में अँधेरा है। क्यों ? क्योंकि बटन नहीं दबाया है। वैसे ही प्यार हरएक के दिल में खूब भरा है। उसे बाहर लाने के लिए बटन दबाने की तरकीब हाथ में आ जायगी, तब ऐसा कोई शख्स नहीं मिलेगा, जो अपनी दौलत या मेहनत आपको नहीं देगा।

### एतबार ही मेरा धन है

प्यार एक बिजली है और बटन है एतबार, विश्वास, यकीन, भरोसा ! इस यकीन के साथ हम दूसरे के पास पहुँचेंगे तो हमें उसके दिल में जगह मिलेगी। आज यह नहीं होता है। इस समय हम एक-दूसरे की तरफ शक-शुबह की निगाह से देखते हैं। अपने बेटे पर, भाई पर प्यार है, वह हम सब महसूस करते हैं। लेकिन वह तो आपके कुनबे के हैं। क्या हम घर के बाहर किसी भाई पर यकीन रखते हैं ? हम एकदम सोचने लग जाते हैं कि वह दूसरी पार्टी का है, दूसरे मजहब का है। न मालूम उसके मन में क्या होगा ? इस तरह मन में शक-शुबह है तो हम एकदिल कैसे बन सकते हैं ? दुराव कायम रहता है तो फिर झगड़े भी पैदा होते हैं। लेकिन अगर हमें एक-दूसरे पर एतबार हो तो जो भी हमसे मिलेगा, वह हमारा प्यारा बन जायगा।

हमारी ही बात लीजिये। हमारा जन्म यहाँसे कहीं दूर हुआ है। लेकिन मौत कहाँ होगी, पता नहीं ! आज अगर यहीं मौत हो जाय तो हमें ऐसा नहीं लगेगा कि अरे ! हमारे मादरे वतन में हमारी मौत नहीं हुई। जहाँ हमारी मौत होगी, वही हमारा वतन। यहाँ हमारे लोग नहीं हैं, ऐसा हमें कतई नहीं लगेगा। बल्कि सभी हमारे ही लोग हैं, यह हमारा ही वतन है, ऐसा ही हमें लगेगा। इस तरह जहाँ हम जाते हैं, वहाँ प्यार लेकर जाते हैं, एतबार लेकर जाते हैं, इसीलिए वह हमारा ही स्थान बन जाता है।

हमें एक भाई ने कहा था कि 'आप कश्मीर जा रहे हैं, लेकिन वहाँ तो जमीन का मसला हल हो चुका है।' हमने कहा "कश्मीर में जमीन मालिक और मुजारों के पास है।" इसपर उस भाई ने कहा "तो फिर आपको जमीन कौन देगा ?" मैंने कहा "देनेवाला जरूर देगा।" और आप देख रहे हैं कि लोग दे रहे हैं। कल क्या हुआ ? मीटिंग में ही लोगों ने दान दिया। हमने गाना गाया, लोगों से भी गवाया। लोगों ने खूब प्यार से गाना गाया। "हमारे गाँव में बेजमीन कोई न रहेगा, कोई न रहेगा।" सभी दान भी दे रहे थे। हमें ऐसा एतबार होना चाहिए। [चालू]

### भूल-सुधार

◆ विनोबा-प्रवचन वर्ष ३, अंक ९५, पृष्ठ ६०७ पर प्रकाशित 'गांधीजी' शीर्षक के अन्तर्गत द्वितीय पंक्ति में 'वैर' छपा है, उसके स्थान पर 'दूर' पढ़ने की कृपा करें।

◆ अंक १०३, पृष्ठ ६५०, कालम २ पर प्रकाशित उद्धरण है एक 'संस्थाओं में सामुदायिक प्रार्थना का स्थान'। प्रेस की भूल के कारण उसके चारों तरफ रूल नहीं लगाया जा सका है। हमारे जागरूक पाठक उसे चालू प्रवचन से अलग समझ लेंगे। ◆

### अनुक्रम

१. सेवा का जिम्मा स्वयं उठायें और शुद्ध हृदय से सेवा करें.
ऊधमपुर ३ सितम्बर '५९ पृष्ठ ६७१
२. प्यार है बिजली, एतबार है बटन, उसे दबाइये तो सही.
सिंगपुर ३१ जुलाई '५९" ६७४

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in